अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

सरुव थुदि

स्वरुप स्तुति

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

उवओगमओ अप्पा अहं, जाणगसरुवो ममि अहा।
णिद्वंदो अहमणिबंधो हं, आणंदकंद - सहज-महा॥
जाणिय सया दु संतमओ, णिय संतरस-पीउं सया।
णिय संतरस-लीणम्मि हं, णिय चेद-धुवरुवो अहा॥1॥

हूँ आत्मा उपयोगमय , ज्ञायक स्वभाव मेरा अहा ।
निर्द्वन्द हूँ निर्बन्ध हूँ , आनन्दकन्द सहज अहा ।।
नित शान्तरसमय जानकर,निज शान्तरस नित पानकर।
निज शांतरस में लीन हूँ,ध्रुवरुप निज अनुभव अहा ॥ 1॥

अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

सरूव थुदि

स्वरूप स्तुति

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

महसु असंखपदेसेसुं , भयवंत - अप्पा णिवसदि ।
हं हुवमि परमप्पा सयं , परमप्प - रूवो विलसदि ॥
हं सिद्धकुल - अंसो हुवमि , हु दंसावदि भविदव्वदा ।
णिय सत्ति-अंसदो सिद्धो हं , दव्वस्स णिय णिय दव्वदा ॥2॥

मेरे असंखप्रदेश में , भगवान् आतम बस रहा ।
मैं हूँ स्वयं परमात्मा , परमात्मरूप विलस रहा ॥
हूँ सिद्धकुल का अंश मैं , बतला रही भवितव्यता।
मैं सिद्ध शक्ति अंश से,निजद्रव्य की निज द्रव्यता ॥2॥

अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

सरूव थुदि

स्वरूप स्तुति

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

रागादि-भाव द विगडीआ,दव्वम्मि णिय णवि दसणं।
परदव्व - परभावाण दु , रुवम्मि चिद णवि फंसणं॥
पुह सव्वदो विर सव्वदो , अवियाररुवो ममि अहा।
हं पूर - सहजसहावदो , जो ह वीदरागमओ बुवा॥3॥

रागादि भाव विकार का , निजद्रव्य में दर्शन नहीं।
परद्रव्य या परभाव का , चित् रूप स्पर्शन नहीं॥
सबसे पृथक् सबसे विलग,अविकार रूप मेरा अहा।
मैं पूर्ण सहज स्वभाव से,जो वीतरागमयी कहा॥3॥

अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

सरूव थुदि

स्वरूप स्तुति

रचयिता - प.पू.भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

गुण - दव्वदो हं धुवमहा , परिणमं णियदं पत्तो हं ।
परिणदं अत्तमओ खलु , सत्तीए णियदओ अत्तो हं ॥
कारण सयं हं कज्जमवि , सिवमग्गो मग्गफलं सयं।
"हं भावलिंगी संतो" जाणग- हुवमि सफल हु जीवणं॥4॥

हूँ द्रव्य-गुण से ध्रुव अहा , नित परिणमन को प्राप्त हूँ।
परिणमन निश्चयत आप्तमय , शक्ति से निश्चय आप्त हूँ॥
कारण स्वयं हूँ कार्य भी ,शिवमार्ग स्वयं हूँ मार्गफल।
"मैं भावलिंगी संत हूँ" , ज्ञायक हूँ मैं, जीवन सफल॥4॥